भाल गांव में शिक्षा

❑ सुरजन गुर्जर

भाल गांव में शिक्षा की प्रक्रिया एक साधारण सी दिखने वाली 'सक्सेस स्टोरी' लग सकती है । किन्तु यह लोकजुम्बिश द्वारा शिक्षा के लोक व्यापीकरण कार्यक्रम का सुदूर अंचल में घटित सूक्ष्म-प्रयोग है । एक ऐसा ठोस उदाहरण जहां संबंधित समुदाय की 'पहली शिक्षित पीढ़ी' तैयार हो रही है ।

यह गांव राजस्थान के अलवर जिले की थानागाजी तहसील के दक्षिण पूर्व में अरावली शृंखला की दो पहाडियों के बीच की तलहटी में बसा है जिसे भाल नाम से पुकारा जाता है । सरिस्का अभयारण्य की गोद में बसे इस गांव की प्राकृतिक छटा काफी मनमोहक है ।

गांव में पहुंचने के लिए थानागाजी से बांदीकुई मार्ग के किशोरी बस स्टेण्ड से लगभग 7-8 किलोमीटर कच्ची सड़क पर चलना पड़ता है । रास्ते के बीच में निकली चट्टानों ने रास्ते को दुर्गम व जंगल ने भयानक बना रखा है। गांव को यहां आबाद हुए लगभग 89-90 वर्ष हो गये हैं । गांव में कुल 42 परिवार रहते हैं जिनमें मात्र एक परिवार ब्राह्मण जाति का है शेष सभी परिवार गुर्जर जाति के हैं जो पिछड़े वर्ग में आते हैं । गांव की आर्थिक हालत खास ठीक नहीं है । मात्र दो परिवारों के पास रहने के पक्के मकान है । शेष सभी के घर कच्चे हैं । घरों की छत चील के पत्तों से ढकी हुई है जिसको हर वर्ष बदलना पड़ता है । गांव वालों का मुख्य व्यवसाय मवेशी पालन है । खेती योग्य जमीन कम होने की वजह से बहुत कम परिवार ऐसे हैं जो वर्ष भर का खाद्यान्न पैदा कर पाते हैं । 10-15 वर्ष से कुछ युवक बाहर पलदारी करने जाने लगे हैं जिससे कुछ परिवारों की आर्थिक स्थिति सुधरने लगी है । गांव वालों के मुताबिक गांव के यहां आबाद होने की वजह मवेशियों के लिए पर्याप्त चारागाह उपलब्ध होना रहा है ।

धार्मिक दृष्टि से गांव के लोग अपनी परम्पराओं के साथ सख्ती से चिपके हुए हैं । किसी भी संकट के हल की जिम्मेदारी

लोक देवता हीरामन व नाहर सिंह बाबा को देते हैं । 8 मई 99 का (अफवाहों के अनुसार प्रलय का दिन) नाहर सिंह बाबा के प्रांगण का दृश्य इस सोच का पक्का सबूत देता है । इस दिन गांव



के सभी स्त्री पुरुष व बच्चे गीत गाकर बाबा से संकट हरण की प्रार्थना कर रहे थे। बाबा लोगों को संकट हरण का अभय दान दे रहा था ।

आज से तीन वर्ष पूर्व तक गांव की शैक्षिक स्थिति अति शोचनीय रही है। विगत 80-90 वर्ष के काल में न तो गांव की बेटी पढ़ लिख कर ससुराल गई है और न ही किसी घर में पढ़ी लिखी बहू आयी है। मात्र दो युवकों ने कुछ वर्ष पूर्व अपनी उच्च प्राथमिक शिक्षा पूरी की है ।

गांव की शोचनीय शैक्षिक स्थिति का पता लोकजुम्बिश परियोजना की परिचालन संस्था तरुण भारत संघ द्वारा किये गये शाला मानचित्रण से चलता है । 1996 में किये गये शाला मानचित्रण के अनुसार गांव की स्थिति इस प्रकार थी ।

गांव के कुल स्त्री पुरुष - 251, स्त्रियां 130, पुरुष 121, कुल बच्चे 63 बालक 28, बालिकाएं 35, शिक्षा से वंचित 62 शिक्षा से जुड़े एक (नोट : शिक्षा से जुडने वाला बच्चा ब्राह्मण जाति से है ।)

शिक्षा की इस चिन्तनीय स्थिति के मुख्य कारण गांव वालों के मुताबिक निम्न रहे हैं :

1. गांव के आस-पास स्कूल का न होना ।

2. गांव वालों का शिक्षा के प्रति लगाव न होना ।

3. विगत में किसी सरकारी या गैर सरकारी संस्था द्वारा इस क्षेत्र में गंभीरतापूर्वक प्रयास नहीं करना।

4. गांव वालों का यह मानकर चलना कि हमारे व्यवसाय में शिक्षा की आवश्यकता नहीं है ।

शाला मानचित्रण से पूर्व व बाद में तरुण भारत संघ के कार्य कर्ताओं ने गांव वालों से गांव की स्थिति पर बात-चीत की जिससे गांव वालों को अहसास हुआ कि आज के संदर्भ में पढ़ना-लिखना इन्सान की मूल-भूत आवश्यकताओं में से एक है ।अत: पढ़ने लिखने की समुचित व्यवस्था होना गांव के लिए अत्यावश्यक है। इस आवश्यकता के मद्देनजर लोकजुम्बिश द्वारा तय मानदण्डों के अनुसार ग्राम सभा में प्राथमिक शाला व सहज शिक्षा केन्द्र का प्रस्ताव लिया गया । इन प्रस्तावों की क्रियान्विति स्वरूप प्राथमिक शाला व सहज शिक्षा केन्द्र का उदघाटन क्रमश: जुलाई, 96 व नवम्बर, 96 में हुआ।

प्राथमिक शाला - सत्र 96-97 में शाला में 54 बच्चों ने प्रवेश लिया जिनमें 32 लडके व 22 लड़कियां थीं । वर्तमान में अध्ययनरत बच्चों की संख्या कक्षावार निम्नवत है

कक्षा	लड़के	लड़कियां	कुल बच्चे
1	10	12	22
2	13	4	17
3	10	1	11
	33	**17**	**50**

गांव वालों के मुताबिक शाला में पढ़ाई ठीक तरह से चल रही है । पर एक ही शिक्षक होने की वजह से शिक्षक के अवकाश पर रहने या सरकारी कार्य से बाहर जाने पर शाला बन्द हो जाती है जिसका बच्चों की पढ़ाई पर प्रतिकूल असर पड़ता है । स्कूल की पढ़ाई से गांव वाले पूरी तरह संतुष्ट हो या नहीं लेकिन सभी गांव वाले एक मत से यह तो स्वीकार करते हैं कि इस शाला से हमारे बच्चों को पढ़ने-लिखने का अवसर मिल पाया है और हमारे बच्चों के आगे शिक्षा से जुड़ने के अवसर बढ़ गये हैं ।

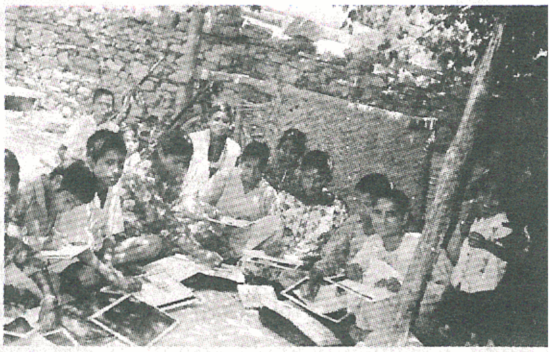
सहज शिक्षा केन्द्र

गांव में सहज शिक्षा केन्द्र आरम्भ होने से पूर्व तय प्रक्रिया अनुसार गांव वालों ने सहज शिक्षा केन्द्र हेतु शिक्षक का चुनाव किया । शिक्षक ने दिगन्तर शिक्षा एवं खेलकूद समिति द्वारा 40 दिवसीय शिक्षक प्रशिक्षण सफलता पूर्वक लिया । यहां उल्लेखनीय है कि इस विकासखण्ड की सहज शिक्षा की अकादमिक जिम्मेदारी का निर्वहन दिगन्तर संस्था कर रही है जिसकी शिक्षा में अपनी खास सोच है । केन्द्र का शुभारंभ 19 नवम्बर, 96 को सायं 7 बजे गांव वालों ने विधिवत उद्घाटन करके किया । पहचान किये गये बच्चों के लच्छा बांधा गया व मुंह मीठा किया गया ।

सहज शिक्षा केन्द्र पर सीखने-सिखाने का कार्य होने लगा।

लेकिन पहचान किये गये बच्चों में से कुछ बच्चे केन्द्र से नहीं जुड़ सके। 20 बच्चे केन्द्र से जुड़े जिनमें 14 लड़कियां, व 6 लड़के थे । पर इस केन्द्र की खास बात यह रही कि बच्चे शुरू से ही काफी मुखर थे और शिक्षक के प्रयासों से दिनों-दिन और मुखर होने लगे। साथ ही सीखने के प्रति उनकी रुचि बढ़ने लगी। कई बार देखने में आया कि अपरिहार्य कारणों से शिक्षक के समय पर न आने पर बच्चे स्वयं ही बड़ी जिम्मेदारी से सफाई करके बैठते और विधिवत अपना काम शुरु कर देते । बच्चों द्वारा आयोजित सभा काबिले तारीफ होती है । बच्चे बिना किसी निर्देश के एक के बाद एक गीत-कवितायें करवाते हैं जैसे कि पहले योजना बनाकर आये हों। यदि किसी दिन कोई बच्चा कविता नहीं कराता है तो उसे मना करने की आवश्यकता नहीं होती है, अगला बच्चा उसके चेहरे की तरफ देखकर तुरन्त भांप जाता है। इस तरह एक दूसरे के प्रति उनकी आपसी समझ भी काफी बेहतर है जो अन्य गतिविधियां करते वक्त भी साफ झलकती है ।

केन्द्र आरंभ होने के 15 दिन बाद किये गये अवलोकन से केन्द्र के एक दिन के कार्य की उभरती तस्वीर इस प्रकार थी ।



7 से 7.10 - नियत समय से 10-15 मिनट पूर्व कुछ बच्चे उस तिवारी के आसपास इकटठे होने लगे जहां पर केन्द्र चलता है। तय समय पर सभी बच्चे उपस्थित हुए । सर्वप्रथम शिक्षक व बच्चों ने मिलकर तिवारी (कच्चा घर जो एक तरफ से पूरा खुला हुआ होता है) सफाई की व दरियां बिछायी ।

7.10 से 7.40 - शिक्षक के निर्देशानुसार सभी बच्चे गोल घेरे में में बैठे और गीत कवितायें गाने लगे, आरंभ में शिक्षक ने दो कवितायें करवायी, उसके बाद तीन बच्चियों ने एक एक गीत मातृभाषा में करवाया और एक कविता मैंने भी करवायी।

7.40 से 8.20 - हिन्दी भाषा (शब्द चित्र कार्ड गतिविधि)

शिक्षक ने 42 शब्द चित्र कार्डों का सैट अपने पास लिया और गोले में बैठे बच्चों को चित्र दिखाकर मानक भाषा में नाम पूछे। बच्चों के न बता पाने पर शिक्षक ने नाम बताये । कुछ बच्चों को चित्र पहचानने व कुछ को मानक भाषा के नाम बताने में समस्या आ रही थी । जैसे बच्चे डलिया को छाबड़ी, अजगर को सांप टमाटर को बैंगन बता रहे थे ।

8.20 से 8.40 हस्तकार्य -शिक्षक ने सभी बच्चों को सफेद कागज दिये और इच्छानुसार चित्र बनाने को कहा । बच्चों ने चित्र बनाये व आपस में दिखाकर खुश हुए । दो-तीन बच्चों के चित्र काफी आकर्षक व सुन्दर बने।

8.40 से 9.30 गणित - शिक्षक ने बच्चों के बीच में 1 से 9 तक की गिनती के चित्र कार्ड रख दिये और बच्चों को कहा कि जिससे मैं कहूं, वह मुझे कहूं उतने चित्रों वाला कार्ड उठा कर देगा। यह कार्य लगभग 30 मिनिट चला। बाद में शिक्षक ने श्यामपट्ट पर चित्र बनाये व बच्चों से संख्या पूछी । पूरी गतिविधि देखने पर लगा कि 9 तक गिनना इन बच्चों को भलीभांति आता है ।

9.30 से 9.55 खेल - बच्चों ने नेता नेता चाल बदल खेल खेला । खेल थोड़ी देर चलने के बाद कुछ बच्चों ने शिक्षक से बारी न आने की शिकायत की । शिक्षक के समझाने के बावजूद एक-दो बच्चे बारी न आने से खिन्न नजर आये । शिक्षक ने अगले दिन उनकी बारी पहले लेने का आश्वासन देकर खेल पूरा मान लिया । खेल के बाद बच्चों ने दरी पट्टियां झाड़ी और शाला की छुट्टी कर दी गई ।

आज पर्यावरण अध्ययन का कार्य नहीं हुआ । शिक्षक ने पूछने पर बताया कि तीन घण्टों में सभी विषयों पर काम करना संभव नहीं हैं । हर रोज कोई न कोई विषय छूट ही जाता हैं पर सभी विषयों को बराबर समय दिया जाता है ।

केन्द्र पर शिक्षक शिक्षण कार्य बड़ी प्रतिबद्धता से कराता रहा है पर इस केन्द्र का शिक्षण कार्य हर वर्ष आश्विन माह में प्रभावित होता रहा है क्योंकि इस माह में सभी बच्चे मक्का की रखवाली करने में मां बाप की मदद करते हैं । ढाई वर्ष के अन्तराल में बच्चों की सीखने की गति सराहनीय रही है । वर्तमान में अध्ययनरत 17 बच्चों का शैक्षणिक स्तर इस प्रकार है ।

2 बच्चे कक्षा पांच के स्तर पर काम कर रहे हैं जबकि शेष बच्चों में अधिकांश कक्षा 3,4 के स्तर पर काम कर रहे हैं ।

गांव में सरकारी शाला व सहज शिक्षा केन्द्र खुलने पर गांव के लगभग सभी बच्चे शिक्षा से जुड़ गये हैं जो प्रशंसनीय है, पर शिक्षा की गुणवत्ता का सवाल अभी शेष है ? ◆